



को नष्ट ही कर देगा। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की दृष्टि से हमें चिन्तन करना चाहिए। स्वार्थ से मतलब सब कुछ मेरे लिए है मेरे परिवार के लिए है। यह भावना उचित नहीं है। हमारी संस्कृति यह सिखाती है कि स्वयं जीयों और दूसरों को भी जीवित रहने दो। तभी चिंतन धारा आगे बढ़ सकती है। स्वार्थ से परे परार्थ की भावना है। परार्थ से तात्पर्य है कि सभी वस्तुओं का उपभोग मिलजुलकर करें। इसमें सामाजिकता की भावना प्रबल रहती है। इससे भी परे परमार्थ की चेतना है। परमार्थ की चेतना जागृत हो जाने पर सब

कुछ हेय प्रतीत होने लगता है। परमार्थ की भावना मोक्ष की भावना है। मानव के जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। अपने स्वरूप में स्थित हो जाना ही 'मोक्ष' कहलाता है। दूसरे शब्दों में आत्मा का परमात्मा में विलय मोक्ष है। जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष है। मोक्ष की स्थिति में कामनाओं का त्याग हो जाता है और आत्मा राग-द्वेष मुक्त हो जाती है। इस स्थिति में सच्चिदानन्द ब्रह्म की अनुभूति होती है।



प्रबोध कुमार गोविल का हिंदी उपन्यास 'अक्राब' अंग्रेज़ी, सिंधी और पंजाबी में लोकार्पित!



जयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार व दूरदर्शन के पूर्व महानिदेशक नन्द भारद्वाज ने प्रबोध कुमार गोविल के बहुचर्चित उपन्यास 'अक्राब' के तीन अन्य भाषाओं- अंग्रेज़ी, पंजाबी और सिंधी अनुवाद की पुस्तकों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में डॉ. नरेंद्र शर्मा कुसुम, अनुकृति प्रकाशन के श्री बाबू खांडा, सिंधी समाज के प्रख्यात सेवी मनोहर रावतानी तथा डॉ. अखिल शुक्ला भी मौजूद थे।

इस अवसर पर प्रबोध कुमार गोविल ने कहा कि इस उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद पाठकों को युवा पत्रकार चित्रेश रिझवानी, सिंधी

में मुंबई की भाग्यता लछानी तथा पंजाबी में पटियाला के डॉ. हर्ष कुमार हर्ष ने उपलब्ध कराया है। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन श्री गजेन्द्र रिझवानी ने किया।

श्री नन्द भारद्वाज ने कहा कि प्रबोध कुमार गोविल कई विधाओं में लिख रहे हैं और उन्हें अपनी बात समूची अर्थवत्ता से कह पाने में महारत हासिल है। डॉ. नरेंद्र शर्मा कुसुम ने कहा कि गोविल के उपन्यासों का कैनवस इतना गहन है कि वो गंभीरता से पढ़े जाने पर विशद अर्थ देता है। डॉ. अखिल शुक्ला ने कहा कि प्रबोध कुमार गोविल एक समर्पित रचनाकार हैं और उनमें अपने पाठकों को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है। बाबू खांडा ने अक्राब उपन्यास की ग्लोबल अप्रोच को बेहद सामयिक और प्रामाणिक बताया।



इस अवसर पर शहर के प्रख्यात कहानीकार रत्न कुमार सांभरिया, रजनी मोरवाल, भागचंद गुर्जर, नीलिमा टिक्कू तथा लोकप्रिय कवि हरीश करमचंदानी, श्याम माथुर, मंजु महिमा भटनागर सहित अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। इस उपन्यास को हिंदी व अंग्रेज़ी में 'साहित्यागार' द्वारा प्रकाशित किया गया है।

—हिमांशु जोनवाल, बरकत नगर, जयपुर